17/07/2020

PHILOSOPHY

Ajeet Kumar
Assistant Professor
C.M.S College

Religion without God

ईश्वर के बिना धर्म सम्भव है या नहीं? यह प्रश्न अक्सर धर्म दर्शन में उठाया जाता है। धर्म की परिभाषा ईश्वर से जोड़ कर भी दी जाती है इन परिभाषा के अनुसार ईश्वर में विश्वास धर्म का अनिवार्य तत्व है धर्म को ईश्वर से जोड़ने वाली परिभाषा यहूदी ईसाई और इस्लाम जैसे पैगम्बरी धर्मों के सन्दर्भ में संतोषजनक लग सकती है लेकिन जब हम जैन और बौद्ध धर्मों जैसे भारतीय मूल के धर्म की ओर ध्यान देते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है कि ये परिभाषा अव्याप्त है; धर्म की ऐसी कोई भी परिभाषा संतोषजनक नहीं मानी जा सकती है जिसके परिणामस्वरूप जैन बौद्ध धर्मों को और यहां तक कि हिन्दू धर्म को निरीश्वरवादी होने के बारे में कोई

संदेह नहीं है। जैन विचारकों द्वारा ईश्वर के समर्थन में दी जाने वाली युक्तियों का खण्डन किया गया है। जैन दर्शन के स्याद्वाद मंजरी में निरीश्वरवाद के समर्थन में विस्तार से युक्तियाँ दी गयी हैं। आठवीं शताब्दी में षड्दर्शनसमुच्चय पर अपने भाष्य तर्करहस्यदीपिका में गुणरत्न ने निरीश्वरवाद का समर्थन किया।

जैन धर्म में विश्व को अनादि माना गया है। ईश्वर को विश्व के रचयिता के रूप में स्वीकार नहीं किया गया है। इसी जैन धर्म में मोक्ष पाने के लिए ईश्वर की सहायता या कृपा कोई आवश्यकता नहीं समझी जाती है। ईश्वर की भक्ति और उपासना के बिना साधक स्वयं अपने प्रयत्नों से जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। बौद्ध धर्म भी का व्यावहारिक उसका पंथवादी रूप निरीश्वरवादी है।